

शाश्वत-सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर विधान

प्रकाशक - श्री वीतराग विज्ञान प्रभावना मण्डल, कानपुर

Scanned by CamScanner

ॐ

।। श्री वीतरागाय नमः ।।

卐 श्री तीर्थराज सम्मेदशिखर विधान 卐

तीर्थराज सम्मेदाचल जय शाश्वत तीर्थक्षेत्र जय जय।
मुनि अनंत निर्वाण पधारे, पाया सिध्द स्वपद शिवमय।।
अजितनाथ, संभव, अभिनंदन, सुमति, पद्म प्रभु मंगलमय।
सुपार्श्व चन्द्राप्रभु स्वामी पुष्पदन्त शीतल गुणमय।।
जय श्रेयांस विमल, अनंत प्रभु, धर्म, शांति जिन कुन्थुसदय।
अरह, मल्लि, मुनिसुब्रत स्वामी, नमिजिन, पार्श्वनाथ जय जय।।
बीस जिनेश्वर मोक्ष पधारे, इस पर्वत से जय जय जय।
महिमा अपरम्पार विश्व में निज स्वभाव की जय जय जय।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवोषट्
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रअत्र ममसन्निहितोभव भव वषट्

Scanned by CamScanner

अगणित सागर पी डाले पर प्यास न कभी बुझा पाया।
अनुपम सुखमय निर्मल शीतल समता जल पीने आया।।
तीर्थराज सम्मेद्शिखर की पूजन कर उर हर्षाया।
बीस तीर्थंकर की यह निर्वाण भूमि लख सुख पाया।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशना जलं

पर भावों के संतापों में उलझ उलझ अति दुःख पाया।
ज्ञानानन्दी शुद्ध स्वभावी निज चदंन लेने आया।। तीर्थ

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनायचदनं

निज चैतन्य रुप को भूला पर ममत्व में भरमाया।।
अक्षय चेतन पद पाने को चरण शरण में मैं आया। तीर्थ

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं॥

Scanned by CamScanner

पर द्रव्यों से राग हटाने का पुरुषार्थ न कर पाया।
शील स्वभाव शातं पाने को कामनाश करने आया।।
तीर्थराज सम्मेदशिखर की पूजन कर उर हर्षाया।
बीस तीर्थकर की यह निर्वाण भूमि लख सुख पाया।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं

तीन लोक का अन्न प्राप्तकर भूख न कभी मिटा पाया।
क्षुधाव्याधि का रोग नशाने निजस्वभाव पाने आया।।तीर्थ

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैबेद्यं

मोह तिमिर के कारण अब तक सम्यक् ज्ञान नहीं पाया।
आत्म-दीप की ज्योति जगाने भेद ज्ञान करने आया।।तीर्थ

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्योमोहान्धकार विनाशनाय दीपं

आत्म ध्यान बिन भव की भीषण ज्वाला में जल दुःख पाया।
अष्टकर्म सम्पूर्ण जलाने ध्यान अग्नि पाने आया।।तीर्थ

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म विनाशनाय धूपं

Scanned by CamScanner

पुण्य फलों में तीव्र राग कर सदा पाप ही उपजाया।
पाप पुण्य से रहित शुध्द परमातम पद पाने आया।।
तीर्थराज सम्मेदशिखर की पूजन कर उर हर्षाया।
बीस तीर्थंकर की यह निर्वाण भूमि लख सुख पाया।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यों मोक्षफल प्राप्तये फलं०।

है अनादि भव रोग न इसकी औषधि अब तक कर पाया।
निज अनर्घ पद पाने का अब तो अपूर्व अवसर आया।।तीर्थ

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ पदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वापामिति स्वाहा।।

श्री सम्मेदशिखर जी पर्वतराज पर२४ टोकों पर २४ कूटों में तीर्थंकरों के चरणचिन्ह हैं। प्रत्येक कूट पर-अर्घ्य पढ़-कर अर्घ्य चढ़ावें।

Scanned by CamScanner

卐 अर्घ्यावलि 卐

१ - ज्ञानधरकूट

(१७ वें तीर्थंकर - कुन्थुनाथ जी का)

कूटज्ञानधर कुन्थुनाथ के पद पूजूं जो हुए जिनेश।
कामदेव सम्राट चक्रवर्ती पद त्याग हुए तीर्थेश।।
शुभ वैशाख शुक्ल एकम को सत्रहवें जिन मुक्त हुए।
इसी कूट से कोटि कोटि मुनि सिध्द स्वपद से युक्त हुए।।
जलगंधाक्षत पुष्प सुचरु ले दीप धूप फल अर्घ्य धरुं।
सम्मेदाचल के पर्वत पर निजस्वरूप का मनन करुं।।
तत्वों का सम्यक निर्णय कर सम्यक् दर्शन ग्रहण करुं।
नाचूं गाऊं अति हर्षाऊं पूजन अर्चन भजन करूं।१।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे ज्ञानधरकूट सेश्री कुन्थु नाथ जिनेन्द्रादि छ्यानवे कोड़ा कोड छ्यानबे करोड़ बत्तीस लाख छ्यानवे हजार सात सौ बयालिस मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र - श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय नमः।

Scanned by CamScanner

२ - गणधर कूट

(चौबीस तीर्थंकरों के गणधरों का गणधर कूट)

चौबीसों तीर्थंकर प्रभु के गणधर सबही मुक्त हुए।
भिन्न - भिन्न क्षेत्रों से स्वामी सिद्ध स्वपद से युक्त हुए।।
वृषभसेन आदिक गौतम स्वामी ऋषियों को करूं नमन।
एक हज़ार चार सौ उन्सठ गणधर गुरुओं को वंदन।।
चरण कमल मैं भाव सहित पूजूं सम्मेदाचल के शीश।
भेद ज्ञान की परम ज्योति दो मुझको हे प्रभु महामुनीश।।
जलगंधाक्षत पुष्प सुचरु ले दीप धूप फल अर्घ्य धरुं।
आत्म तत्व का निर्णय करके निज स्वरुप का मनन करुं।
तत्वों का सम्यक् निर्णयकर सम्यक् दर्शन ग्रहण करुं।
नाचूं गाऊं अति हर्षाऊं पूजन अर्चन भजन करूं।२।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिन तीर्थंकर गणधर चरण कमलेभ्यो अर्घ्यम्

जाप्य मंत्र -श्री समस्त गणधर देवेभ्यः नमः

Scanned by CamScanner

३ - मित्रधर कूट

(२१ वे तीर्थंकर श्री नमिनाथ जी का)

कूट मित्रधर श्री नमिनाथ जिनेश्वर ईक्कीसवें महान।
शुभ वैशाख कृष्ण चौदस को अनुपम हुआ मोक्ष कल्याण ।।
निज स्वभाव का आश्रय लेकर शुक्ल ध्यान धर मुक्त हुए।
इसी कूट से कोटि कोटि मुनि सिद्ध स्वपद से युक्त हुए ।।
जलगंधाक्षत पुष्प सुचरु ले दीप धूप फल अर्घ्य धरूं।
सम्मेदाचल के पर्वत पर निज स्वरुप का मनन करूं ।।
तत्वों का सम्यक् निर्णय कर सम्यक् दर्शन ग्रहण करूं।
नाचूं गांऊ अति हर्षाऊं पूजन अर्चन भजन करूं ।।३।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे मित्रधर कूट से श्री नमिनाथ जिनेन्द्रादि नौ सौ कोड़ा कोड़ी एक अरब पैंतालीस लाख सात हजार नौ सौ बयालीस मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र - श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नम :

Scanned by CamScanner

४ - नाटक कूट

(१८ वें तीर्थंकर श्री अरहनाय जी का)

नाटक कूट अरह जिनवर के पद कमलों में करूं प्रणाम।
अष्टादशम् तीर्थंकर प्रभु कामदेव चक्री गुण धाम॥
दिवस अमावस चैत्र कृष्ण को अष्ट कर्महर मुक्त हुए।
इसी कूट से कोटि कोटि मुनि सिद्ध स्वपद से युक्त हुए॥
जलंगधाक्षत पुष्प सुचरु ले दीप धूप फल अर्घ्य धरूं।
सम्मेदाचल के पर्वत पर निज स्वरूप का मनन करूं॥
तत्वों का सम्यक् निर्णय कर सम्यक् दर्शन ग्रहण करूं।
नाचूं गाऊं अति हर्षाऊं पूजन अर्चन भजन करूं॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे नाटक कूट से श्रीअरहनाथ जिनेन्द्रादि निन्यानवे करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हज़ार

नौं सौ निन्यानबे मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेभेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सत्त

जाप्य मंत्र - श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः

Scanned by CamScanner

५ - संवल कूट

[१९ वें तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जी का]

संवल कूट मल्लि जिनवर का, उन्नीसवें प्रभु तीर्थंकर।
फागुन शुक्ल पंचमी के दिन, पाई सिद्ध शिला सत्वर।।
दुर्जय मोह मल्ल को जीता, वीतराग बन मुक्त हुए।
इसी कूट से कोटि कोटि मुनि, सिद्ध स्वपद से युक्त हुए।।
जलगंधाक्षत पुष्प सुचरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य धरूं।
सम्मेदाचल के पर्वत पर, निज स्वरूप का मनन करूं।।
तत्वों का सम्यक निर्णय कर सम्यकदर्शन ग्रहण करूं।
नाचूं गाऊँ अति हर्षाऊ पूजन अर्चन भजन करूं।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे संवल कूट से श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्रादि छयानवे करोड़ मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र - श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः

Scanned by CamScanner

६-संकुल कूट

[११ वें तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ जी का]

संकुल कूट झुकाऊं मस्तक भाव सहित मैं करुं नमन।
श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन पाया स्वामी सिध्द सदन॥
एकादशम आप तीर्थंकर श्रेयांसनाथ जिन मुक्त हुए।
इसी कूट से कोटि कोटि मुनि सिध्द स्वपद से युक्त हुए॥
जलगंधाक्षत पुष्प सुचरु ले दीप धूप फल अर्घ्य धरूँ।
सम्मेदाचल के पर्वत पर निज स्वरुप का मनन करूँ॥
तत्वों का सम्यक् निर्णय कर सम्यक्दर्शन ग्रहण करूँ।
नाचूं गाऊं अति हर्षाऊं पूजन अर्चन भजन करूँ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे संकुल कूट से श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्रादि छयानवे कोडाकोडी छयानवे करोड़ छयानवे लाख नौ हजार पांच सौ बयालिस मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र - श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः

Scanned by CamScanner

७- सुप्रभ कूट

[९ वें तीर्थंकर श्री पुष्पदन्त जी का]

सुप्रभ कूट नवम तीर्थंकर पुष्प-दंत का मोक्ष स्थान।
भादव शुक्ल अष्टमी के दिन पावन हुआ मोक्ष कल्याण।।
घाति अघाति कर्म वसु नाशे गुण अनंत संयुक्त हुए।
इसी कूट से कोटि कोटि मुनि सिद्ध स्वपद पा मुक्त हुए।।
जलगंधाक्षत पुष्प सुचरु ले दीप धूप फल अर्घ्य धरूं।
सम्मेदाचल के पर्वत पर निज स्वरूप का मनन करूं।।
तत्वों का सम्यक् निर्णय कर सम्यक् दर्शन ग्रहण करूं।
नाचूं गाऊं अति हर्षाऊं पूजन अर्चन भजन करूं।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे सुप्रभ कूट से श्री पुष्पदंत जिनेन्द्रादि एक कोड़ा कोड़ी निन्यानवे लाख सात हजार चार सौ अस्सी सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र - श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः

Scanned by CamScanner

८ - मोहन कूट

[६ वें तीर्थंकर श्री पद्मप्रभ जी का]

मोहन कूट पद्मप्रभु स्वामी षष्टम तीर्थंकर जिनराज।
फागुन कृष्ण चतुर्थी, के दिन तपकर दिन हुए सिध्द महाराज।।
इकशत अड़तालीस प्रकृतियां कर्म नाशकर मुक्त हुए।
इसी कूट से कोटि कोटि मुनि सिद्धस्वपद से मुक्त हुए।।
जलगंधाक्षत पुष्प सुचरु ले दीप धूप फल अर्घ्य धरूं।
सम्मेदाचल के पर्वत पर निज स्वरूप का नन करूं।।
तत्वों का सम्यक् निर्णय कर सम्यक्दर्शन ग्रहण करूं।
नाचूं गाऊं अति हर्षाऊं पूजन अर्चन भजन करुं।।८।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे मोहन कूट से श्रौ पद्मप्रभ जिनेन्द्रादि निन्यानवे करोड़ सत्तासी लाख तेतालीस हजार सात सौ नब्बे मुनि, सिद्धपद प्राप्तेभ्यो : सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यम निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र - श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमः

Scanned by CamScanner

९ - निर्जर कूट

[२० वें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतनाथ जी का]

निर्जर कूट मुनि सुव्रत स्वामी ने निज आतम को ध्याया।
फागुन कृष्ण द्वादशी के दिन महामोक्ष मंगल पाया।।
तीर्थंकर बीसवें जिनेश्वर कर्म जाल से मुक्त हुए।
इसी कूट से कोटि कोटि मुनि सिद्ध स्वपद से युक्त हुए।।
जलगंधाक्षत पुष्प सुचरु ले दीप धूप फल अर्घ्य धरूं।
सम्मेदाचल के पर्वत पर निज स्वरूप का मनन करूं।।
तत्वों का सम्यक् निर्णय कर सम्यक् दर्शन ग्रहण करूं।
नाचूं गाऊं अति हर्षाऊं पूजन अर्चन भजन करूं।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे निर्जर कूट से श्री मुनिसुब्रतनाथ जिनेन्द्रादि निन्यानबे कोड़ा कोड़ी सन्तानवे करोड़ नौ लाख नौ सौ निन्यानवे मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र - श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः

Scanned by CamScanner

१० - ललित कूट

[८ वें तीर्थंकर श्री चन्दाप्रभु जी का]

ललित कूट अष्टम, तीर्थंकर, चंदाप्रभु को करूं नमन।
फागुन शुक्ल सप्तमी के दिन, तुमने पाया मुक्ति गगन।।
निज स्वभाव का आश्रय लेकर, पर विभाव हर मुक्त हुए।
इसी कूट से कोटि कोटि मुनि, सिद्ध स्वपद से युक्त हुए।।
जलगंधाक्षत पुष्प सुचरू ले, दीप धूप फल अर्घ्य धरूं।
सम्मेदाचल के पर्वत पर, निज स्वरुप का मनन करूं।।
तत्वों का सम्यक् निर्णय कर सम्यक्दर्शन ग्रहण करूं।
नाचूं गाऊं अति हर्षाऊं, पूजन अर्चन भजन करूं।।१०।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे ललित कूट से श्री चंदाप्रभु जिनेन्द्रादि नौं सौ चौरासी अरब बहत्तर करोड़ अस्सी लाख चौरासी हजार पांच सौ पचपन मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र - श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः

Scanned by CamScanner

११ - सर्वसिध्दवर कूट

(प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ जी का]

अष्टापद कैलाश शिखर से, आदिनाथ प्रभु मुक्त हुए।
माघ कृष्ण की चतुर्दशी को, मुक्तिबधू से युक्त हुए।।
पहिले त्रेसठ, प्रकृति नाश, की फिर पच्चासी हुई विनाश।
प्रथम तीर्थंकर के पथ पर, चलकर पाऊं ज्ञान प्रकाश।।
प्रभु के चरण कमल वंदन कर हर्षित अर्घ्य चढ़ाता हूँ।
तुम समान मैं भी बन जाऊं, यही भावना भाता हूँ।।
तत्वों का सम्यक् निर्णय कर, सम्यक् दर्शन ग्रहण करूं।
नाचूँ गाऊँ अति हर्षाऊँ, पूजन अर्चन भजन करूं।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टापद कैलाश सिद्धक्षेत्रे श्री ऋषभनाथ जिनेन्दादि बालि महाबालि , नागकुमार आदि अनेक मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र - *आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः*

Scanned by CamScanner

१२ - विद्युतवर कूट

(१० वें तीर्थंकर श्री शीतलनाथ जी का]

कूट श्री विद्युतवर पावन, शीतलनाथ दशम् तीर्थेश।
आश्विन शुक्ल अष्टमी के दिन, पाया सिद्ध स्वपद सर्वेश ।।
दर्शन ज्ञानमयी स्वभाव का, आश्रय लेकर मुक्त हुए।
इसी कूट से कोटि कोटि मुनि, सिध्द स्वपद से युक्त हुए ।।
जलगंधाक्षत पुष्प सुचरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य धरूं।
सम्मेदाचल के पर्वत पर निज स्वरुप का मनन करूं ।।
तत्वों का सम्यक् निर्णय कर, सम्यक् दर्शन ग्रहण करूं।
नाचुं गाऊं अति हर्षाऊं, पूजन अर्चन भजन करूं ।।१२।।

ॐ ह्री श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे विद्युतवरकूट से श्री शीतलनाथ जिनेन्द्रादि अठारह कोड़ा कोड़ी बयालीस करोड़ बत्तीस लाख बयालिस-हजार नौ सौ पाँच मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

जाप्य मंत्र - *श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः ।*

Scanned by CamScanner

१३- स्वयंभू कूट

[१४ वें तीर्थंकर श्री अनंतनाथ जी का]

कूट स्वयंभू बने अयोगी, शुद्ध अनंतनाथ भगवान।
चैत्र कृष्ण अमावस के दिन, पाया सिद्ध स्वपद निर्वाण।।
चतुर्दशम तीर्थंकर स्वामी भव बन्धन से मुक्त हुए।
इसी कूट से कोटि कोटि मुनि सिद्ध स्वपद से युक्त हुए।।
जंलगधाक्षत पुष्प सुचरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य धरूं।
सम्मेदाचल के पर्वत पर, निज स्वरूप का मनन करूं।।
तत्वों का सम्यक् निर्णय कर, सम्यक् दर्शन ग्रहण करूं।
नाचूं गाऊं अति हर्षाऊं, पूजन अर्चन भजन करूं।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे स्वयंभू कूट से श्री अनंत नाथ जिनेन्द्रादि छ्यानवे कोड़ा कोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख सत्तर हजार सात सौ सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र - श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः

Scanned by CamScanner

१४ - धवल कूट

[तीसरे तीर्थंकर श्री संभवनाथ जी का]

धवल कूट संभव जिनवर के, चरणांबुज मै करूं नमन।
वीतराग अकषाय भाव से, तुम सर्वज्ञ हुए भगवन।।
चैत्र शुक्ल षष्ठी को स्वामी, शुक्ल ध्यान धर मुक्त हुए।
इसी कूट से कोटि कोटि मुनि सिद्ध स्वपद से युक्त हुए।।
जलंगधाक्षत पुष्प सुचरू ले दीप धूप फल अर्घ्य धरूं।
सम्मेदाचल के पर्वत पर, निज स्वरूप का मनन करूं।।
तत्वों का सम्यक् निर्णय कर, सम्यक् दर्शन ग्रहण करूं।
नाचूं गाऊं अति हर्षाऊं, पूजन अर्चन भजन करूं।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे धवल कूट से श्री संभव नाथ जिनेन्द्रादि नौ कोड़ा कोड़ी बहत्तर लाख बयालीस हजार पांच सौ मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र - श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः

Scanned by CamScanner

१५ - मंदारगिरि कूट

[१२ वें तीर्थंकर श्री वासुपूज्य जी का]

चंपापुर से वासुपूज्य, द्वादशम तीर्थंकर स्वामी।
सिद्ध हुए सिद्धत्व प्राप्तकर, त्रिभुवनपति अंतरयामी।।
परम पारिणामिक स्वभाव से, पाया केवल ज्ञान प्रकाश।
द्रव्य कर्म नौकर्म भावकर्मों का, तुमने किया विनाश।।
चरण चिन्ह प्रभु के दर्शन कर, हुआ हृदय में हर्ष महान।
भादव शुक्ला चतुर्दशी को, तुमने पाया पद निर्वाण।।
प्रभु के चरण कमल बन्दन कर, हर्षित अर्घ्य चढ़ाता हूं।
तुम समान मैं भी बन जाऊं, यही भावना चाहता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री चंपापुर सिद्धक्षेत्रे श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रादि अनेक मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र - *श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः*

Scanned by CamScanner

१६-आनन्द कूट

[चतुर्थ तीर्थंकर श्री अभिनंदननाथ जी का]

चरण चिन्ह आनंद कूट, अभिनंदन प्रभु का दर्श करूं।
शुभ वैशाख शुक्ल षष्ठी को, सिद्ध हुए प्रभु हर्ष करूं।।
अजर अमर अविकल अविनाशी, अविचल पद पर मुक्त हुए।
इसी कूट से कोटि कोटि मुनि, सिद्ध स्वपद से युक्त हुए।।
जलगंधाक्षत पुष्प सुचरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य धरूं।
सम्मेदाचल के पर्वत पर, निज स्वरूप का मनन करूं।।
तत्वों का सम्यक् निर्णय कर, सम्यक् दर्शन ग्रहण करूं।
नाचूं गाऊं अति हर्षाऊं, पूजन अर्चन भजन करूं।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे आनन्द कूट से श्री अभिनंदन नाथ जिनेन्द्रादि बहत्तर कोड़ा कोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख बयालीस हजार सात सौ मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र - श्री अभिनंदन नाथ जिनेन्द्राय नमः।

Scanned by CamScanner

१७ - सुदत्तवर कूट

[१५ वें तीर्थंकर श्री धर्मनाथ जी का]

कूट सुदत्त हर्ष से बन्दूं, धर्मनाथ के चरण कमल।
शुक्ल चतुर्थी ज्येष्ठ मास की, पाया मोक्ष स्वपद अविकल।।
धर्मचक्रपति पन्द्रहवें तीर्थंकर, कर्मनाश जिन मुक्त हुए।
इसी कूट से कोटि कोटि मुनि, सिद्ध स्वपद से युक्त हुए।।
जलगंधाक्षत पुष्प सुचरू ले दीप धूप फल अर्घ्य धरूं।
सम्मेदाचल के पर्वत पर, निज स्वरूप का मनन करूं।।
तत्वों का सम्यक् निर्णय कर, सम्यक् दर्शन ग्रहण करूं।
नाचूं गाऊं अति हर्षाऊं, पूजन अर्चन भजन करूं।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे सुदत्त कूट से श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रादि ऊन्नीस कोड़ा कोड़ी उन्नीस करोड़ नौ लाख नौ हजार सात सौ पन्चानबे मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र - श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः

Scanned by CamScanner

१८ - अविचल कूट

[५ वें तीर्थंकर श्री सुमतिनाथ जी का]

अविचल कूट विनय से, बंदू सुमतिनाथ पंचम तीर्थेश।
चैत्र शुक्ल एकादशमी को, स्वामी सहज हुए सिद्धेश।।
शेष प्रकृति पच्चासी कर्म, अधाति नाश कर मुक्त हुए।
इसी कूट से कोटि कोटि मुनि, सिद्ध स्वपद से युक्त हुए।।
जलगंधाक्षत पुष्प सुचरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य धरूँ।
सम्मेदाचल के पर्वत पर निज स्वरुप का मनन करुं।।
तत्वों का सम्यक् निर्णय कर सम्यक् दर्शन ग्रहण करूँ।
नाचूं गाऊं अति हर्षाऊं पूजन अर्चन भजन करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे अविचल कूट से श्रीसुमतिनाथ। जिनेन्द्रादि एक कोड़ा कोड़ी चौरासी करोड़ बहात्तर लाख इक्यासी हजार सात सौ मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र - श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः

Scanned by CamScanner

१९ - कुन्दप्रभ कूट

[१६ वें तीर्थंकर श्री शांतिनाथ जी का]

शांतिनाथ सौलह तीर्थंकर का, है श्री कुन्दप्रभ कूट।
ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी को, पाया स्वामी मोक्ष अटूट।।
कामदेव सम्राट चक्रवर्ती, पद त्यागा मुक्त हुए।
इसी कूट से कोटि कोटि मुनि, सिद्ध स्वपद से युक्त हुए।।
जलगंधाक्षत पुष्प सुचरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य धरूँ।
सम्मेदाचल के पर्वत पर, निज स्वरूप का मनन करूँ।।
तत्वों का सम्यक् निर्णय कर, सम्यक् दर्शन ग्रहण करूँ।
नाचूं गाऊं अति हर्षाऊं, पूजन अर्चन भजन करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे कुन्दप्रभ कूट से श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रादि नौ कोड़ा कोड़ी नौ लाख नौ हजार नौ सौ निन्यानबे मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र - श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः

Scanned by CamScanner

२० - महावीर कूट

[२४ वें तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी जी का]

महावीर अंतिम तीर्थंकर, वर्धमान सन्मति भगवान।
कार्तिक कृष्ण अमावस्या को, पाया पावापुर निर्वाण।।
प्रभु के चरण कमल बंदन कर, सविनय शीश झुकाता हूँ।
तुम समान मै भी बन जाऊं, यही भावना भाता हूं।।
सात तत्व पर श्रद्धा करके, करूं आत्मा का चिंतन।
जो अनादि से कभी न पाया, पाऊं वह सम्यक्दर्शन।।
प्रथम स्वरुपाचरण अंत मैं यथाख्यात चारित पाऊं।
जल फलादि बसुद्रव्य अर्ध्य अर्पित करके निज को ध्याऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्धक्षेत्रे श्री महावीर जिनेन्द्रादि अनेक मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो अर्ध्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र - श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः

Scanned by CamScanner

२१ - प्रभास कूट

[७ वें तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ जी का]

कूट प्रभास सुपार्श्वनाथ, सप्तम तीर्थंकर पद बन्दूं।
फागुन कृष्ण सप्तमी के दिन, मोक्षगये प्रभु अभिनंदूं।।
समवशरण वैभव न सुहाया पंचम गति पा मुक्त हुए।
इसी कूट से कोटि कोटि मुनि, सिद्ध स्वपद से युक्त हुए।।
जलगंधाक्षत पुष्प सुचरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य धरूं।
सम्मेदाचल के पर्वत पर, निज स्वरूप का मनन करूं।।
तत्वों का सम्यक् निर्णय कर सम्यक् दर्शन ग्रहण करूं।
नाचूं गाऊं अति हर्षाऊं पूजन, अर्चन भजन करूं।।२१।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे प्रभास कूट से सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि उनन्वास कोड़ा कोड़ी चौरासी करोड़ बहात्तर लाख सात हजार सात सौ बयालीस सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र - श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः

Scanned by CamScanner

२२ - सुवीरकुल कूट

[१३ वें तीर्थंकर श्री विमलनाथ जी का]

जय सुवीरकुल कूट विमल, प्रभु तेरहवें तीर्थेश महान।
शुभ आषाढ़ शुक्ल अष्टम को, तुमने पाया पद निर्वाण !!
हो अयोग केवली कर्म बंधन से स्वामी मुक्त हुए।
इसी कूट से कोटि कोटि मुनि सिद्ध स्वपद से युक्त हुए।।
जलगंधाक्षत पुष्प सुचरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य धरूं।
सम्मेदाचल के पर्वत पर, निज, स्वरूप का मनन करूं।।
तत्वों का सम्यक् निर्णय कर, सम्यक् दर्शन ग्रहण करूं।
नाचूं गाऊं अति हर्षाऊं, पूजन अर्चन भजन करूँ ।।२२।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे सुवीरकुल कूट से **श्री विमलनाथ जिनेन्द्रादि सत्तर कोडाकोडी साठ लाख छह** हजार सात सौ बयालीस मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र - श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः।

Scanned by CamScanner

२३ - सिध्दवर कूट

[२ रें तीर्थंकर श्री अजितनाथ जी का]

कूट सिद्धवर अजितनाथ प्रभु द्वितीय तीर्थंकर स्वामी।
चैत्र शुक्ल पंचम को पाया तुमने सिद्धलोक नामी।।
अविनश्वर निज लक्ष्मी पाकर भव सागर से मुक्त हुए।
इसी कूट से कोटि कोटि मुनि सिद्ध स्वपद से युक्त हुए।।
जलगंधाक्षत पुष्प सुचरु ले दीप धूप फल अर्ध्य धरूं।
सम्मेदाचल के पर्वत पर निज स्वरूप का मनन करूं।।
तत्वों का सम्यक् निर्णय कर सम्यक् दर्शन ग्रहण करूं।
नांचूं गाऊं अति हर्षाऊं पूजन अर्चन भजन करूं।।२३।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे सिद्धवर कूट से श्री अजितनाथ जिनेन्द्रादि एक अरब अस्सी करोड़ चौवन लाख एक हजार मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यम् निर्विपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र - श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः

Scanned by CamScanner

२४ - उर्जयन्त कूट

[२२ वें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ जी का]

ऊर्जयन्त गिरनार शिखर से नेमिनाथ प्रभु मुक्त हुए।
शुभ आषाढ़ शुक्ल सप्तम को मुक्तिबधू से युक्त हुए।।
सहस्त्रमवन में दीक्षा धर पाया केवल ज्ञान प्रकाश।
निश्चय रत्नत्रय धारण कर पाया सिद्ध पुरी का वास।।
अर्घ्य पुंज अर्पित करते ही मेरे मन का कमल खिला।
तत्वों के सम्यक् निर्णय का अनुपम अवसर आज मिला।।
प्रभु चरणाम्बुज बन्दन करके सविनय शीष झुकाता हूँ।
तुम समान मैं भी बन जाऊं यही भाबना भाता हूँ।।२४।।

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रे श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्रादि शंवुकुमार प्रद्युमन कुमार अनिरुद्ध कुमार आदि बहात्तर करोड़ सात सौ मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र - श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः

Scanned by CamScanner

२५ - सुवर्णभद्र कूट

[२३ वें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ जी का]

कूट सुवर्णभद्र दर्शन कर मन में अति आनंद हुआ।
पार्श्वनाथ के चरण पूज कर मानव जीवन धन्य हुआ।।
प्राप्त चतुर्दश गुणस्थान कर प्रभु ने योग अभाव किया।
समश्रेणी में ऊर्ध्व गमनकर सिद्ध लोक में वास लिया।।
तन परमाणु ऊड़े कपूरवत केवल शेष रहे नख केश।
इन्द्र सुरों ने जय ध्वनि पूर्वक मायामय तन रचा विशेष।।
अग्निकुमार सुरों ने आ मुकुटानल से तन भस्म किया।
पावन भस्मी का सबने निज के मस्तक पर तिलक किया।।
श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन महामोक्ष कल्याण हुआ।
सम्मेदाचल के पर्वत पर जय जय मंगल गान हुआ।।
तेइसवें तीर्थंकर प्रभु भव बंधन से मुक्त हुए।
इसी कूट से कोटि कोटि मुनि सिद्ध स्वपद से युक्त हुए।।
जलगंधाक्षत पुष्प सुचरु ले दीप धूप फल अर्घ्य धरूं।
सम्मेदाचल के पर्वत पर निज स्वरूप का मनन करूं।।
तत्वों का सम्यक् निर्णय कर सम्यक् दर्शन ग्रहण करूं।
नाचूं गाऊं अति हर्षाऊं पूजन अर्चन भजन करूं।।२५।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे सुवर्णभद्र कूट से श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि बयासी करोड़ चौरासी लाख पैंतालिस हजार सात सौ बयालीस मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र - श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः

Scanned by CamScanner

समुच्चय अर्घ्य

श्री सम्मेदशिखर पर्वत को नमन करूं मैं बारंबार।
शाश्वत सिद्ध क्षेत्र अति पावन शुभ निर्वाण भूमि सुखकार।।
भूत भविष्य वर्तमान के तीर्थंकर उत्तम तप धार।
वीतराग सर्वज्ञ देव बन हो जाते भव सागर पार।।
मुनि असंख्य निर्वाण जा चुके अनुपम तीर्थ क्षेत्र शिवकार।
इसका कण कण महापूज्य है इसकी महिमा अपरम्पार।।
इस पर्वत को अर्घ्य चढ़कार शुद्ध भाव लूँ उर में धार।
दर्शन पूजन करके मानव जीवन सफल हुआ इस बार।।
तीन लोक में गूंज रही है इस पर्वत की जय जयकार।
जिन प्रभुओं की जय जय कार ऋषि मुनियों की जय जयकार

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर आदि असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यो श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यम् निर्वापामीति स्वाहा।

मंगल तीर्थअमंगल हारी मंगलमय मंगल आधार।
कोटि कोटि उपवासों का फल दर्शन से होता साकार।।

इत्याशीर्वाद:

Scanned by CamScanner

卐 ।। जयमाल ।। 卐

सम्मेदाचल शीश से तीर्थंकर मुनिराज।
सिद्ध हुए सम श्रेणी में ऊपर रहे विराज ।।१।।
प्रभु चरणाम्बुज पूज कर धन्य हुआ मैं आज।
भाव सहित वंदन करूं निज शिव सुख के काज ।।२।।
जय जय शाश्वत सम्मेदाचल तीर्थ विश्व में श्रेष्ठ प्रधान।
भूत भविष्यत् वर्तमान के तीर्थंकर पाते निर्वाण ।।३।।
परम तपस्या भूमि सुपावन है अनंत मुनिराजों की।
शुभ पवित्र निर्वाण धरा है यह महान जिनराजों की ।।४।।
लक्ष - लक्ष वृक्षों की हरियाली से पर्वत शोभित है।
वातावरण शान्तमय सुन्दर लख कर यह जग मोहित है ।।५।।
शीतल और गन्धर्व सलिल निर्झर जल धारायें न्यारी।
भांति भांति के पक्षीगण करते है कलरव मनहारी ।।६।।
पर्वत पारसनाथ मनोरम यह सम्मेदशिखर अनुपम।
भाव संहित जो बन्दन करते उनका क्षय होता भ्रमतम ।।७।।
बीस टोंक पर बीस तीर्थंकर के चरण चिन्ह अभिराम।
शेष टोंक पर चार जिनेश्वर श्री मुनियों के चरण ललाम ।।८।।

Scanned by CamScanner

प्रथम टोंक है कुन्थुनाथ की प्रातः रवि बन्दन करता।
अन्तिम पार्श्वनाथ प्रभु की संध्या सूर्य नमन करता ।।९।।
कूट सिद्धवर अजितनाथ का धवलदत्त संभवजिन का।
अभिनंदन आनंदकूट जय अविचलकूट सुमतिजिन का ।।१०।।
मोहन कूट पद्म प्रभ का है प्रभु सुपार्श्व का प्रभास कूट।
ललितकूट चंदाप्रभु स्वामी पुष्पदंत जिन सुप्रभकूट ।।११।।
विद्युतकूट श्री शीतलजिन श्रेयांसनाथ का संकुलकूट।
श्री सुबीरकुलकूट विमलप्रभु नाथ अनन्त स्वंयभू कूट ।।१२।।
जय प्रभु धर्म सुदत्तकूट जय शांति जिनेश कुन्दप्रभुकूट।
कूट ज्ञानचर कन्थूनाथ का अरहनाथ का नाटक कूट ।।१३।।
संवर कूट मल्लि जिनवर का, निर्जरकूट मुनि सुव्रतनाथ।
कूट मित्रधर श्री नमि जिनका, स्वर्णभद्र प्रभु पारसनाथ ।।१४।।
सर्व सिद्धवरकूट आदिप्रभु वासुपूज्य मंदारगिरि।
उर्जयन्त है कूट नेमि प्रभु सन्मति का महान श्री ।।१५।।
चौबीसों तीर्थंकर प्रभु के गणधर स्वामी सिद्ध भगवान।
गणधर कूट भाव से पूजूं मैं भी पाऊं पद निर्वाण ।।१६।।
बीस कूट से बीस तीर्थंकर ने है पाया मोक्ष महान।
इसी क्षेत्र से तो असंख्य मुनियों ने पाया है निर्वाण ।।१७।।

Scanned by CamScanner

भव्य गीत सम्यक् दर्शन का सहज सुनाई देता है।
रत्नत्रय की महिमा का फल यहाँ दिखाई देता है ।।१८।।
सिद्ध क्षेत्र है तीर्थ क्षेत्र है पुण्य क्षेत्र है अति पावन।
भव्य दिव्य पर्वत मालायें ऊंची नीची मन भावन ।।१९।।
मधुवन में मन्दिर अनेक हैं भव्य विशाल मनोहारी।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर की प्रतिमाएं सुखकारी ।।२०।।
नन्दीश्वर की सुन्दर रचना श्री बाहुबलि के दर्शन।
ऊंचा मानस्तम्भ सुशोभित पार्श्वनाथ का समवशरण ।।२१।।
पुण्योदय से इस पर्वत की सफल यात्रा हो जाये।
नरक और पशुगति का निश्चित बन्ध नहीं होने पाये ।।२२।।
मैं सम्यक्त्व ग्रहण कर प्रभु कब तेरह विधि चारित्र धरूं।
पंच महाव्रत धार साधु बन इस भू पर निर्भय विचरूं ।।२३।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्र तप आराधना चार चितधार।
शुध्द आत्मा अनुभव से नित प्रति हो स्वरूप साधना अपार ।।२४।।
मन बच काया शुद्धि पूर्वक भाव सहित की है पूजन।

Scanned by CamScanner

यह संसार भ्रमण मिट जाए हे प्रभु ! पाऊँ मुक्ति गगन ।।२५।।
नित द्वादश भावना चिन्तवन करके दृढ़ वैराग्य धरूँ।
भेदज्ञान कर पर परणति तज निज परणति में रमण करूँ ।।२६।।
इसी क्षेत्र से महामोक्ष फल सिद्ध स्वपद को मैं पाऊँ।
अष्ट कर्म को नष्ट करूं मैं परम शुद्ध प्रभु बन जाऊँ ।।२७।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

श्री सम्मेदशिखर का दर्शन पूजन जो जन करते हैं।
मुक्तिकन्त भगवन्त सिद्ध वन भवसागर से तरते हैं।।

।। इत्याशीर्वाद ।।

जाप्य मंत्र - ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः ॥

—— *कविवर पं० राजमल जी पवैया (भोपाल)*

हे जिनवाणी माँ !
तेरा वैभव अमर रहे माँ ! हम दिन चार रहें न रहें
भव के कष्ट नशें आश्रय से, कर्म कलंक कोई न रहें

Scanned by CamScanner